भक्तामर-मंगल-गीता

—: लेखक :—

आशुकवि श्री फूलचन्द्र शास्त्री "पुष्पेन्दु"
खुरई (म० प्र०)

—: प्रकाशक :—

निर्मलकुमार संदीपकुमार जैन
दिगम्बर जैन ग्रंथमाला
केशवगंज सागर (म० प्र०)

—: मुद्रक :—

शैलेश डाह्याभाई कापडीया
जैन विजय प्रि. प्रेस
गांधीचौक, सुरत. टे. नं. २७६२१

मूल्य : ५-००

भक्तामर-महिमा

श्री भक्तामर का पाठ, करो नित प्रातः ।
भक्ति मन लाईं सब संकट जायें नशाई ।।

जो ज्ञान-मान मतवारे थे, मुनि मानतुंग से हारे थे ।
उन चतुराई से नृपति लिया बहकाई ।। सब संकट जायें०।।
मुनि श्री को नृपति बुलाया था, सैनिक जा हुकम सुनाया था ।
मुनि वीतराग को आगा नहीं सुहाई ।। सब संकट जायें० ।।
उपसर्ग घोर तब आया था, बल पूर्वक पकड़ मंगाया था ।
हथकड़ी बेड़ियों से तन दिया बंधाई ।। सब संकट जायें०।।
मुनि कारागृह भिजवाये थे, अड़तालिस ताले लगाये थे ।
क्रोधित नृप बाहर पहरा दिया बिठाई ।। सब संकट जायें०।।
मुनि शान्त भाव अपनाया था, श्री आदिनाथ को ध्याया था ।
हो ध्यान मग्न भक्तामर दिया बनाई ।। सब संकट जायें०।।
सब बन्धन टूट गए मुनि के, ताले सब स्वयं खुले उनके ।
कारागृह से आ बाहर दिये दिखाई ।। सब संकट जायें० ।।
राजा नत होकर आया था, अपराध क्षमा करवाया था ।
मुनि के चरणोंमें अनुपम भक्ति दिखाई ।। सब संकट जायें०।।
जो पाठ भक्तिसे करता है, नित ऋषभ-चरण चित धरता है ।
जो ऋद्धि-मंत्र का विधिवत् जाप कराई ।। सब संकट जायें० ।
भय-विघ्न उपद्रव टलते हैं, विपदा के दिवस बदलते हैं ।
सब मन-वांछित हों पूर्ण शान्ति छा जाई ।। सब संकट जायें०।।
जो वीतराग आराधन है, आतम उन्नति का साधन है ।
उससे प्राणी का भव बन्धन कट जाई ।। सब संकट जायें०।।
कौशल सु-भक्ति को पहिचानो-संसार-दृष्टि बन्धन जानो ।
लो भक्तामरसे आतम-ज्योति प्रकटाई ।। सब संकट जायें०।।

मंगल-चरण-प्रभा

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ ॥

नत-मस्तक सुर भक्तों के
जिनवर-पद अनुरक्तों के
मुकुटों की झिलमिल मणियां
मणियों की हीरक लड़ियां
जगमग जगमग दमक उठीं
प्रतिबिम्बित हो चमक उठीं
जिनके पावन चरणों से
चरण-युगल की किरणों से
युग-युग शरण प्रदाता हों
पतितों के भव त्राता हों
जो समुद्र में डूबे हैं
जन्म-मरण से ऊबे हैं
उनके सारे कष्ट हरें
पाप-तिमिर को नष्ट करें
उनको सम्यक् नमन करूं
भक्तामर आभरण वरूं

'मानतुँग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ ॥१॥

तत्वज्ञो द्वारा स्तुत्य

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥

जिनकी मंगल-गीता को
द्वादशांग नवनीता को
इन्द्रों ने गा पाया है
तीनों लोक रिझाया है
तत्व-बोध प्रतिभा द्वारा
बहा काव्य-रस की धारा
ललित, मनोहर, छन्दों में
बड़े बड़े अनुबंधों में
भाव भरी स्तुतियों में
भक्ति भरी अंजुलियों में
उन्हीं प्रथम परमेश्वर का
तीर्थंकर वृषभेश्वर का
अभिनन्दन मैं करता हूँ
पद वन्दन मैं करता हूं
यही अचंभा भारी है
सचमुच विस्मय कारी है

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥२॥

मेरा साहस पूर्ण कदम

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥
नाथ ! आपका सिंहासन
सिंहासन के युगल-चरण
अर्चित हैं देवों द्वारा
चर्चित हैं इन्द्रों द्वारा
मेरा काव्य असम्मत है
फिर भी मेरी हिम्मत है
निर्मल-जल के अन्दर जो
चंदा दिखता सुन्दर जो
वह उसकी परछैंयां है
अथवा भूल-भूलैयां है
मुट्ठी मध्य जकड़ने की
हिम्मत उसे पकड़ने की
बालक ही कर सकता है
अंजुल में भर सकता है
बुद्धिहीन कहलाऊंगा
लाज छोड़ कर गाऊंगा
'मानतुँग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥३॥

अन्तरात्मा की आवाज

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीत गाता हूँ ।।

जिनवर के गुण कैसे हैं ?
धुली चांदनी जैसे हैं
उन्हें न कोई गा सकता
पार न कोई पा सकता
चाहे स्वयं बृहस्पति हो
प्रत्युत्पन्न महामति हों
वे भी आखिर हारे हैं
फिर तो हम बेचारे हैं
प्रलयंकर तूफानी हो
गहरा—गहरा पानी हो
मगर मच्छ भी उछल-उछल
मचा रहे हों उथल-पुथल
ऐसा सिन्धु भुजाओं से
हाथों की नौकाओं से
कौन भला तिर सकता है ?
दरिया में गिर सकता है ?

'मानतुँग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ ।।४।।

गुणों का कीर्तन

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ ॥
शक्ति-हीन होने पर भी
चतुराई खोने पर भी
भगवत् भक्ति उमड़ती है
स्तुति करनी पड़ती है
जैसे कोई हिरनिया हो
छौना चुन-चुन-मुनिया हो
उस पर शेर झपटता हो
नहीं हटाये हटता हो
तो क्या हिरणी माँ भोरी ?
दिखलायेगी कमजोरी ?
नहीं सामना करती क्या ?
भला शेर से डरती क्या ?
अपना वत्स बचाती है
तनिक नहीं सकुचाती है
बछड़ा उसको प्यारा है
जिसने उसे दुलारा है
'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ ।.५॥

उमड़ती हुई भक्ति-प्रेरणा

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥
हंसी उड़ाया जाऊंगा
मूर्ख बनाया जाऊंगा
यद्यपि मैं विद्वानों से
गानों की तुकतानों से
तो भी भक्ति ढकेल रही
नाकों डाल नकेल रही
वही प्रेरणा करती है
बोल कंठ में भरती है
ज्यों वसंत के आने पर
मादकता छा जाने पर
महक उठी है बगिया क्यों ?
चहक उठी कोयलिया क्यों ?
क्योंकि कैरियां महक उठीं
अतः कोयलें चहक उठीं
गुण से आप महकते हैं
इससे भक्त बहकते हैं
'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥६॥

पाप-संतति का समापन

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ।।
जन्म-जन्म से जोड़ रखे
अपने शिर पर ओढ़ रखे
जीवों ने जो पाप यहां
दुःख और सन्ताप यहां
वे प्रभु के गुण गाने से
मंगल—गीत सुनाने से
छिन भर में उड़ जाते हैं
नहीं फटकने पाते हैं
भौंरे सा जो काला है
जगत् ढांकने वाला है
ऐसा घोर अंधेरा हो
मिथ्यातम का डेरा हो
सूरज-किरण निकलते ही
ज्ञान-दीप के जलते ही
सचमुच वह खो जाता है
छू मंतर हो जाता है
'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ ।।७।।

स्तवन का मूल कारण

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥

पानी की भी बूंद अगर
गिरे कमल के पत्तों पर
मोती तुल्य दमकती है
चमचम चारू चमकती है
यही सोच प्रारम्भ किया
मंगल गीतारंभ किया
सज्जन खुश हो जायेंगे
फूले नहीं समायेंगे
वे तो इस पर रीझेंगे
श्रेय आप को ही देंगे
भले रहूँ अज्ञानी मैं
भोला-भाला प्राणी मैं !
भाव—प्रभाव तुम्हारा है
केवल चाव हमारा है
तुमने उसे संवारा है
सत्पुरूषों को प्यारा है

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥८॥

गुण गाथा का पुण्य-प्रभाव

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ ॥

चूर-चूर हो जाते हैं
दोष दूर हो जाते हैं
जिनकी मंगल-गीता से
पावन परम पुनीता से
उसकी चर्चा नहीं यहां
उसकी अर्चा नहीं यहां
लेकिन पुण्य कथाएं ही
हरती जगत व्यथाएं ही
पाप सभी धुल जाते हैं
ओलों से घुल जाते हैं
कोसों दूर दिवाकर है
फिर भी वे कमलाकर हैं
जल में कमल खिलाते हैं
किरणों को पहुंचाते हैं
अर्चायें तो दूर रहें
चर्चायें भर पूर रहें

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ ॥९॥

भक्तियोग से साम्ययोग

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ ॥

भूतनाथ जिन भगवान है !
त्रिभुवन के आभूषण है !
गुण—गाथा गाने वाले
स्तुति अपनाने वाले
तुम जैसे बन जाते हैं
सब विभूतियां पाते हैं
भौतिक और अभौतिक भी
लौकिक और अलौकिक भी
इसमें कुछ आश्चर्य नहीं
पा जाते ऐश्वर्य यहीं
जो अपने आधीनों को
दास, दरिद्री, दीनों को
करे नहीं अपने जैसा
वह स्वामी स्वामी कैसा ?
कैसा उसका धन पैसा ?
अगर गरीब निराश्रय जैसा

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ ।
उनके भावो की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ ॥१०॥

हृदय की आंखों से

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥
इकटक तुम्हें निहार रहीं
तुम पर सब कुछ वार रहीं
ये अखियां अब जाएं कहां?
तुम जैसा अब पाएं कहां?
दर्शनीय हो नाथ! तुम्हीं
वर्णनीय हो नाथ! तुम्हीं
जिसने निर्मल-नीर पिया
क्षीर-सिन्धु का क्षीर पिया
छिटकी धवल जुँन्हैया सा
मीठा—मधुर मिठइया सा
वह क्या लवण समुद्रों का?
खारा पानी क्षुद्रों का?
पीकर प्यास बुझायेगा?
सागर तट पर जायेगा?
कभी नहीं पी सकता है
प्यासा ही जी सकता है
'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावो की यह माला, भक्तो को पहिनाता हूँ॥११॥

परमौदारिक दिव्य-देह

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ ॥

वीतराग हर कण-कण है
चुम्बकीय आकर्षण है
कण-कण में सुन्दरता है
कण-कण मोहित करता है
जिसने तुम्हें बनाया है
सुन्दर रूप सजाया है
वे सारे कण पृथ्वी पर
उतने ही थे धरती पर
सो अब तुम में व्याप्त हुए
कुल परमाणु समाप्त हुए
इसीलिये तो कोई नहीं
तुम सा सुन्दर दिखे कहीं
तुम ही शान्त मनोहर हो
तीन लोक में सुन्दर हो
हे प्रशांत मुद्रा धारी !
सुन्दरता की बलिहारी !!

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ ॥१२॥

वीतराग मुख-मुद्रा

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ।।

तीन लोक की उपमाएं
जिसे देख कर शरमाएं
देवों और नरेन्द्रों के
विद्याधर धरणेन्द्रों के
नयनों को हरने वाला
मन मोहित करने वाला
कहाँ आपका मुखड़ा है ?
कहाँ चांद का टुकड़ा है !
कहाँ मलीन मयंक अरे ?
जिसको लगा कलंक अरे !
दिन में फीका पड़ जाता
लज्जा से गड़-गड़ जाता
कुम्हलाता अलवत्ता है
ज्यों पलाश का पत्ता है
उपमा नहीं चन्द्रमा की
आनन से दी जा सकती

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तो को पहिनाता हूँ ।।१३।।

आत्मोक गुणों की स्वच्छंदता

आदिनाथ के चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ ।
भक्तामर के अभिनन्दन को मंगल-गीता गाता हूँ ॥

सकल कलाओं वाले हैं
चंदा के उजयाले हैं
गुण अनंत परमेश्वर के
उज्जवल ज्ञान कलाधर के
भरते खूब छलाँगे हैं
तीनों लोक उलाँघे हैं
फैल रहे मनमाने हैं
कोई नहीं ठिकाने हैं
जिसने पल्ला पकड़ लिया
दामन कसके जकड़ लिया
केवल एक जिनेश्वर का
तीन लोक ज्ञानेश्वर का
जिन पर छत्रच्छाया है
वीतराग की माया है
रोक-टोक कुछ उन्हें नहीं
घूमें वे तो जहाँ कहीं

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ ॥१४॥

निर्विकार निष्कंप प्रभो

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥

देवलोक की परियाँ भी
सुन्दरियाँ किन्नरियाँ भी
कामुक हाव—भाव लाई
रंचक नहीं डिगा पाई
इसमें अरे अचम्भा क्या ?
तिलोत्तमा या रंभा क्या ?
आँधी उठे कयामत की
शामत हो हर पर्वत की
उड़ते और उखड़ते हों
बनते और बिगड़ते हों
पर सुमेरू की चोटी क्या ?
छोटी से भी छोटी क्या ?
डाँवाडोल हुआ करती
आँधी उसे छुआ करती
मेरु नहीं टस से मस हों
जिनवर नहीं काम वश हों

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥१५॥

चिन्मय रत्न-दीप

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ ॥

बिना धुंआ बत्ती वाला
तेल नहीं जिसमें डाला
फिर भी जो आलोक भरे
जग-मग तीनों लोक करे
ऐसे स्व-पर प्रकाशक हो
पाप-तिमिर के नाशक हो
ज्योतिर्मय हो जीवक हो
आप निराले दीपक हो
तेज आँधियां चले भले
पर्वत-पर्वत हिलें भलें
फिर भी बुझा नहीं पाया
अमर—दीप हमने पाया
जिसमें काम—कलंक नहीं
देह-नेह का पंक नहीं
चिदानंद चिन्मयता है
निज में ही तन्मयता है

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ ॥१६॥

कैवल्य ज्ञान मार्तण्ड

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ।
होते हैं जो अस्त नहीं,
कभी राहु से ग्रस्त नहीं।
एक साथ झलकाते हैं,
तीनों लोक दिखाते हैं।
सूरज से भी बढ़ कर हैं,
महिमाएं बढ़ चढ़ कर हैं।
नहीं बादलों में गहरा,
छिपा रहे अपना चेहरा।
परम प्रतापी तेजस्वी,
महा मनस्वी ओजस्वी।
सचमुच आप मुनीश्वर हैं,
सूरज से भी बढ़कर हैं।
एक साथ झलकाते हैं,
जग प्रत्यक्ष दिखाते हैं।
मोह–राहु का ग्रहण नहीं,
कर्मों का आवरण नहीं।
'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति–प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ ॥१७॥

सम्यक् ज्ञान-कलाधर

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥

ज्ञानोदय सर्वोदय है
नित्य सत्य अरूणोदय है।
मोह-तिमिर हट जाता है
मिथ्यातम फट जाता है।
बादल नहीं छला करते,
राहु नहीं निगला करते।
ऐसा चांद निराला है,
मुखड़ा कमलों वाला है।
नव प्रकाश भर देता है,
जग ज्योतित कर देता है।
घटती उसकी कान्ति नहीं,
हटती समरस शान्ति नहीं।
ऐसा चांद निराला है,
ज्ञान कलाओं वाला है।
कमल स्वरूपी मुख मंडल,
दीप्तिमान अत्यन्त विमल।

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥१८॥

निष्प्रयोज्य रवि–शशि–मंडल

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल–गीता गाता हूँ॥

दिन के लिये दिवाकर हैं,
निशि के लिये निशाकर हैं।
दोनों चमका करते हैं,
अन्धकार भी हरते हैं।
पर मुख चन्द्र तुम्हारा जो,
जीवों को है प्यारा जो।
वह अज्ञान अंधेरे को,
मिथ्यातम के घेरे को।
एक अकेला भगा रहा,
सारा जग जगमगा रहा।
सूर्य चन्द्र से मतलब क्या?
रही जरूरत भी अब क्या?
जगत प्रकाशित करने की,
व्यर्थ रोशनी भरने की।
ज्यों फसलों के पकने पर
व्यर्थ बरसते हैं जलधर,

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति–प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥१९॥

त्रिमूर्ति और रत्नत्रय मूर्ति

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥
जैसी केवल ज्योति-प्रभा,
सम्यक् ज्ञान कला प्रतिभा।
शोभा पाती प्रभुवर में,
वैसी ब्रम्हा हरिहर में।
स्वपर प्रकाशक दीप्ति नहीं,
शुचि अखण्ड प्रज्ञप्ति नहीं।
जगमग मणि मुक्ताओं में,
हीरों की कणिकाओं में।
जैसा तेजो पुंज भरा,
चकाचौंध मय सहज खरा।
वैसा तेज न कांचों में,
किरणा कुलित किराचो में।
कभी प्राप्त हो सकता है,
नहीं व्याप्त हो सकता है।
सूरज से किरणें भरते,
परावर्त्त उनको करते।
'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥२०॥

बीतरागता और सरागता

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥

मानूं अपना बहुत भला,
जो मैं इनको देख चला।
ये कैसे हैं ? रागी हैं,
महादेव बडभागी हैं।
क्योंकि इन्हें निरखने से,
अच्छी तरह परखने से।
बड़ा लाभ तो यही हुआ,
मन संतोषित नहीं हुआ।
किन्तु आपके दर्शन से,
और सूक्ष्म अवलोकन से।
मुझ को यह नुकसान हुआ !
स्थिर मेरा ध्यान हुआ।
तुम पर ऐसा टिका अरे !
जन्म-जन्म को बिका अरे !
यह चंचल मन अटक रहा,
तव पद में सर पटक रहा।

'मानतुँग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ ॥२१॥

एकश्चन्द्रो तमोहन्ति

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ।

यहाँ सैकड़ों महिलाएं,
बनती रहती माताएं।
सौ सौ बालक जनती है,
पुनः प्रसूता बनती है।
किन्तु आप की माता सी,
भगवत् जन्म प्रदाता सी।
नहीं दूसरी होती है,
मंगल प्रसव संजोती है।
सभी दिशाएं—विदिशाएं,
नभ का आंगन चमकाएं,
टिम-टिम नभ के तारों से,
गोदी भरी हजारों से।
किन्तु एक तेजस्वी को,
सूरज से ओजस्वी को।
पूर्व दिशा ही जनती है,
सच्ची माता बनती है।

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तो को पहिनाता हूँ ॥२२॥

सार्थक नाम समुच्चय

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ।

हे मुनियों के नाथ मुनी,
तुम को भजते परम गुनी।
सूर्यकान्त तुम को कहते,
तेजवन्त रवि से रहते।
अमल तुम्हीं कहलाते हो,
तापस दूर भगाते हो।
तुम्हीं परम पुरुषोत्तम हो,
तुम्हीं मोक्ष के संगम हो।
तुमको जिसने पाया है,
भलीभाँति अपनाया है।
वही मौत को जीत चुका।
भव-भय उसका बीत चुका।
वह मृत्युञ्जय कहलाता,
जो तुमको सचमुच ध्याता।
क्योंकि छोड़कर तुम्हें कहीं;
मोक्ष-पंथ है और नहीं।

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ।।२३।।

निर्नाम नाम प्रसिद्धि

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥

संतों ने इन नामों से,
सजा विविध सिरनामों से।
नाथ! आप ही अव्यय हो,
शाश्वत् निर्मल अक्षय हो।
परे विकल्पों से रहते,
संख्यातीत तुम्हें कहते।
तुम्हीं प्रथम तीर्थंकर हो,
आदि ब्रह्म, शिव-शंकर हो।
ईश्वर तुम को संत कहें,
नहीं तुम्हारा अंत कहें।
कामदेव का नाश किया,
सम्यक् ज्ञान प्रकाश किया।
योगीश्वर कहलाते हो,
योग मार्ग बतलाते हो।
तुम्हीं अनेक स्वरूपी हो,
एकमेव चिद्रूपी हो।

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ।२४॥

वास्तविक आप्तपना

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥

बोधि लाभ के पाने से,
केवल ज्ञान जगाने से।
बुद्ध आप ही सिद्ध हुए,
शंकर परम प्रसिद्ध हुए।
क्योंकि तीन ही लोकों के
हरने वाले शोकों के।
मंगल कर्त्ता शंकर है!
ऋषभदेव तीर्थंकर है!
देवों द्वारा अर्चित हो,
धीर नाम से चर्चित हो।
मुक्ति-मार्ग बतलाते हो,
विधि-विधान जतलाते हो।
इससे तुम्हीं विधाता हो,
सृष्टि नियम निर्माता हो।
पुरुषोत्तम प्रत्यक्ष तुम्हीं,
समवशरण अध्यक्ष तुम्हीं।

'मानतुँग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥२५॥

द्रव्य-नमन और भाव-नमन

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥

हे तीनों ही लोकों के,
दुःखों—कष्टों—शोकों के।
दूर करैया नमन—नमन,
चूर करैया नमन—नमन।
अलंकार भू-मंडल के,
आभूषण अवनी—तल के।
शिरोमणी हे नमन—नमन,
अग्रगणी हे नमन—नमन।
तीन लोक के स्वामी हैं
परमेश्वर अभिरामी हैं।
मन-वच-तन से नमन-नमन,
निज चेतन से नमन-नमन।
सिन्धु सोखने वाले हैं,
भ्रमण रोकने वाले हैं।
भवदधि शोषक नमन-नमन,
युग उद्घोषक नमन-नमन।

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥२६॥

दोषों की अभिव्यञ्जना

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ।

गुण सारे के सारे ही,
आये शरण तुम्हारे ही।
वहीं ठसाठस पिल बैठे,
आप सहारे मिल बैठे।
दोष गर्व से इतराये,
इधर-उधर सब छितराये।
फूले नहीं समाते थे,
विविध ठिकाने पाते थे।
खोटे खोटे देवों के,
छोटे छोटे देवों के।
इसीलिये मदहोशों ने
सपने में भी दोषों ने।
नहीं आप को झाँका भी,
मूल्य आप का आँका भी!
इसमें अचरज कौन अरे?
गुण ही गुण से आप भरे।

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तो को पहिनाता हूँ ॥२७॥

अशोक-प्रातिहार्य-रूपक

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ ॥

तरु अशोक की छाँव तले,
लगते हो प्रभु बहुत भले ।
रूप रश्मियां निखर रहीं,
ऊपर ऊपर बिखर रहीं ।
परमौदारिक काया से,
उच्च वृक्ष की छाया से ।
सूर्य बिम्ब हो निकल रहा,
अँधियारे को निगल रहा ।
फूट रही है उसमें से,
छूट रहीं हैं उसमें से ।
किरणें ऊपर ऊपर को,
भेद रहीं हैं अम्बर को ।
कजरारे बादल दल से,
मानो गिरि नीलांचल से ।
सूर्य आरती करता है,
भक्ति—भारती भरता है ।

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ ॥२८॥

सिंहासन-प्रातिहार्य-रुपक

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ ॥

सिंहासन के मणियों की,
रत्नजटित किंकणियों की ।
रंग-बिरंगी किरणों से,
किरणों की भी नोकों से ।
चित्रित जो सिंहासन है,
मणि-मंडित पीठासन है ।
उस पर कंचन काया है,
महा पुण्य की माया है ।
उदयाचल का उच्च शिखर,
उसी शिखर की चोटी पर ।
मानो सूरज उदित हुआ,
अवनी अंबर मुदित हुआ ।
रवि की किरण लताओं का,
कोटि-कोटि समुदायों का ।
मानो तना चँदोवा है,
क्या ही बढ़िया शोभा है ?

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ ।
उनके भावो की यह माला, भक्तो को पहिनाता हूँ ॥२९॥

चल चांवर प्रतिहार्य रूपक

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्ताभर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥

कुंद-कुंद मचकुंद धवल,
सुरभित सुमनस वृंद नवल।
शुभ्र चंवर के ढुरने से,
नीचे ऊपर फिरने से।
स्वर्ण कान्त आभा वाली,
दिव्य-देह शोभा शाली।
इतनी मन भावन लगती,
रम्य परम पावन लगती।
मानो झरना झरता हो,
जल प्रपात सा गिरता हो।
स्वर्णाचल के अंचल पर,
धवल धार से छल-छल कर।
उगते हुऐ कलाधर की,
शुभ्र ज्योत्स्ना शशधर की।
लगती जितनी निर्मल है,
धारा उतनी उज्ज्वल है।

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥३०॥

छत्रत्रय–रत्नत्रय–प्रातिहार्य रूपक

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल–गीता गाता हूँ ॥

तीन छत्र अति सुन्दर हैं,
विशद शीर्ष के ऊपर हैं।
चन्द्रकान्त से उज्ज्वल हैं
सौम्य, अचंचल, शीतल हैं।
झिलमिल मणि झल्लरियों ने,
मणियों की वल्लरियों ने।
शोभा अधिक बढ़ाई है,
प्रभुता ही प्रकटाई है।
मार्तण्ड का तेज प्रखर,
रोक रहे अपने ऊपर।
मानो वे दरशाते हैं,
छत्रत्रय बतलाते हैं।
तीन लोक के स्वामी हो,
भक्त नयन पथगामी हो।
प्रातिहार्य छत्रत्रय का,
चमत्कार रत्नत्रय का।

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति–प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ ॥३१॥

देव-दुन्दुभि प्रातिहार्य रूपक

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥

बजा गगन में नक्कारा,
दिग् दिगन्त गूंजा सारा।
मधुर-मधुर ऊँचे स्वर से,
हुई घोषणा अम्बर से।
सत्य-धर्म की जय जय जय,
आत्म-धर्म की जय जय जय।
जय बोलो तीर्थंकर की,
जय बोलो अभ्यंकर की।
जन-जन का यह मेला है,
तीन लोक तक फैला है।
हुऐ इकट्ठे जीव सभी,
हर्षोत्फुल्ल अतीत सभी।
बजा जीत का डंका है,
इसमें भी क्या शंका है?
जय के नारे लगा रही,
विजय दुन्दुभि जगा रही।

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥३२॥

पुष्प-वृष्टि-प्रातिहार्य-रूपक

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ।
रिमझिम अमृत—वर्षण के,
शीतल सुखद समीकरण के।
मंद—मंद झोंके बहते,
सुरभित गंध युक्त रहते।
उन झोकों से गिरे हुए,
डंठल नीचे किये हुए।
फूलों की लग रही झड़ी,
उपमा ऐसी जान पड़ी।
कल्पवृक्ष नंदन वन के,
अंबर के चंदन वन के।
पारिजात मंदार सुमन,
सन्तानक सुन्दर कुसुमन।
ऊर्ध्वमुखी होकर गिरते,
मानों दिव्य-वचन खिरते।
पंक्तिबद्ध वृषभेश्वर के,
तत्व निबद्ध जिनेश्वर के।
'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ।।३३।।

आभा-मंडल प्रातिहार्य रूपक

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ ॥

तेजो राशि महा-मंगल,
चमक रहा आभा-मंडल ।
रश्मि पुँज बिखराता है,
ऐसी कांति दिखाता है ।
जैसे अनगिनती सूरज,
एक साथ ले तेज-ध्वज ।
पृष्ठ भूमि में उदय हुए,
तमस्तोम सब विलय हुए ।
विद्यमान तीनों जग का,
दीप्तिमान तीनों जग का ।
वस्तु समूह लजाया है,
प्रभा देख शरमाया है ।
फिर भी सौम्य चांदनी सा,
भा-मंडल हत रजनी सा,
शोभनीक है, शीतल !
आदर्शी दर्पण-तल है ।

'मानतुँग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ ॥३४॥

दिव्य-ध्वनि प्रातिहार्य रूपक

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥

दिव्य-ध्वनि ओंकार मयी
घन-गर्जन झंकार मयी।
स्वर्ग-मोक्ष मग दर्शाती,
पथ प्रशस्त करती जाती।
सम्यक् धर्म सुनाती हुई,
त्रिभुवन पार लगाती हुइ।
द्रव्य—गुणों—पर्यायों का,
विशद वस्तु समुदायों का।
भाव—अर्थ प्रकटाती है,
परिवर्तित हो जाती है,
श्रोताओं की भाषा में,
भावों भरी पिपासा में।
सहज रूप परणित होती,
दिव्य-ध्वनि निःसृत होती।
यही विलक्षण अतिशय है,
अनेकान्त निःसंशय है।

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥३५॥

चरण-कमल तल स्वर्ण-कमल

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥

प्रभु के चरण युगल कैसे ?
नूतन स्वर्ण-कमल जैसे।
प्रभा पुंज बिखराते हैं,
रश्मि जाल फैलाते हैं।
नख-शिख प्रसरित उजयाला,
चतुर्मुखी आभा वाला।
निकल रहा है चरणों से,
दीप्त नखों की किरणों से।
के चरणाम्बुज जहां जहां,
पड़ते प्रभु के वहां वहां,
कदम-कदम पर बिछते हैं,
सुरगण जिनको रचते हैं।
कमल पाँवड़े सोने के,
सुन्दर और सलोने के।
कमला चरणों की चेरी,
है विभूति प्रभुवर तेरी।

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥३६॥

समवशरण का वैभव

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ ॥
जितना जैसा जो ऐश्वर्य,
पाया जाता है जिनवर्य्य !
वैभव धर्म सभाओं का,
सर्वोदयी विधाओं का ।
धर्म—देशना बेला में,
समवशरण के मेला में ।
नहीं दूसरों का वैसा,
पाया जाता तुम जैसा ।
जैसी दीप्ति दिवाकर में,
दिपती घोर तिमिर-हर में ।
वैसा कहाँ सितारों में ?
टिम-टिम ज्योति हजारों में ।
परम ज्योति परमेश्वर है !
केवल ज्ञान दिवाकर है !
समवशरण अधिनायक हैं !
आत्म तत्व के गायक हैं !
'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ ।
उनके भावों की यह माला, भक्तो को पहिनाता हूँ ॥३७॥

क्रोध रूपी पशुता पर विजय

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥

भीम—काय ऐरावत सा,
महा भयंकर पर्वत सा।
कोई गज उच्छृंखल हो,
मतवाला हो, चंचल हो।
गालों से मद झरने से,
कुलषित उनको करने से।
भौंरे भी मँडराते हो।
क्रोध अधिक भड़काते हों।
ऐसा हाथी सन्मुख हो,
बेवश, बेरस, बेरूख हो।
किन्तु आपके शरणागत,
याकि आपके किर्त्तन रत।
तनिक न उससे डरते हैं,
वश में उसको करते हैं।
क्योंकि आप अभ्यंकर हैं,
वीतराग तीर्थंकर हैं।

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥३८॥

हिंसक बर्बरता पर विजय

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥

बर्बर सिंह हाथियों पर
झपटे अगर छलाँगें भर।
खूनी पंजे गाड़े हों,
गज-गज मस्तक फाड़े हों।
टपक रहे हों गज-मुक्ता,
उज्ज्वल और रूधिर सिक्ता।
वसुधा का शृंगार करे,
मानो मुक्ताहार धरे।
ऐसे सिंह के पंजों में,
फंस कर क्रूर शिकंजों में।
कभी शिकार न हो सकता।
उस पर वार न हो सकता।
यदि वह भक्त तुम्हारा है,
युग पद-शैल सहारा है।
चरणों की ही ओट जहाँ
उस पर कोई चोट कहाँ !

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥३९॥

अशान्ति की ज्वाला का शमन

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ ॥

आंधी प्रलयंकारी हो,
दावानल यदि भारी हो ।
धधका हो ज्वालाओं से,
भभका तेज हवाओं से ।
चिनगारी चिनगारी हों,
अंगारे भी जारी हों ।
चारो ओर मचे हा ! हा !!
मानो विश्व हुआ स्वाहा ।
लपटें ऐसी निकल रहीं,
मानो जग को निगल रहीं ।
किन्तु आपका जप-बल ही,
नामो का मंत्रित जल ही ।
अग्नि प्रचण्ड बुझाता है,
शान्ति-सुधा बरसाता है ।
वीतराग में राग कहां ?
अरे राग को आग कहाँ ?

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ ।
उनके भावो की यह माला, भक्तो को पहिनाता हूँ ॥४०॥

विषय भुजंगों के विष का उपचार

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥

ऊपर को फण किये हुए,
लाल-लाल दृग लिये हुए।
क्रोध भरा मतवाला हो,
कोयल जैसा काला हो।
सर्प भुजंग निराला हो,
बढ़कर डसने वाला हो।
मगर आपके नामो की,
स्तुति के आयामो की।
नाग दमनियां जो रखता,
मन ही मन अमृत चखता।
ऐसा भक्त उलाँघेगा,
पाँव नाग पर रख देगा।
सर्प पटक फण रह जाये,
भक्त मगर बढ़ता जाये।
पथ उसका निःशंक रहे,
नहिं अहि का आतंक रहे।

'मानतुँग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥४१॥

कर्म शत्रुओं पर बिजय

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ ॥

घोड़े हिन-हिन करते हो
गज चिंघाड़ें भरते हो।
रण का दृश्य भयंकर हो,
शत्रु फौज बलवत्तर हो।
वह भी पीठ दिखायेगी,
अपने मुंह की खायेगी।
उदित सूर्य की किरणों से,
उनकी पैनी नोकों से।
अन्धकार भिद् जाता है,
अंग-अंग छिद जाता है।
त्यों ही तुमको भजने से,
स्तुति विनय सिरजने से।
भक्त विजय पा जाता है,
दुश्मन घबरा जाता है।
सैना छिन्न - भिन्न होती
डर से खेद खिन्न होती।

'मानतुँग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ ॥४२॥

चेतन-कर्म युद्ध में आत्म-विजय

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥

पैने बरछी, भालों से,
तलवारों, करवालों से।
कट-कट हस्ती मरते हों;
नदी खून की भरते हों।
शूर वीर अतराते हों!
आतुरता दिखलाते हों!!
शीघ्र पार हो जाने की,
दुश्मन पर जय पाने की।
दुश्मन महा भयंकर हो,
जिसे जीतना दुष्कर हो।
सो भी जय पा जाता है,
रण में नाम कमाता है।
जिसके चरण सरोजों की,
मंजुल पद अंभोजों की।
शीतल छत्रच्छाया हो,
जिसने तुमको ध्याया हो।

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥४३॥

भव-समुद्र को भक्ति नौका

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ ॥

मगर मच्छ घड़ियाल जहाँ
जीव—जन्तु विकराल जहाँ ।
लहरें अति उत्ताल जहाँ,
बडवानल की ज्वाल जहाँ ।
सुलगी महा समुन्दर में,
जल के क्षुब्ध बवंडर में,
डावाँडोल जहाज हुए,
प्राणों के मुंहताज हुए ।
जल—यात्रा करने वाले,
महा मृत्यु वरने वाले ।
किन्तु आपको रटने से,
भक्ति मार्ग पर डटने से ।
सुखासीन बहते जाते.
भय—विहीन बढ़ते जाते ।
अपने इष्ट ठिकानों पर,
बैठ कुशल जल यानों पर ।

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ ॥४४॥

जन्म-जरा-मृत्यु रोग विनाशनाय

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥
भीषण रोग जलोदर हो,
बद सूरत लम्बोदर हो।
टेढ़े मेढ़े अंग हुए।
अवयव सारे भंग हु।
चिन्ता जनक अवस्था हो,
हालत बिल्कुल खस्ता हो।
चारों ओर निराशा हो,
गिनती की ही श्वासा हो।
अगर आपको वह भज ले,
अमृतमयी चरण-रज ले।
अपने अंग रमायेगा,
तो सब रोग भगायेगा।
नव—जीवन पा जायेगा,
सुन्दर तन पा जायेगा।
मनहर, मंजु मनोजों सा।
सुन्दर, नेघड़ सरोजौं सा।
'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तो को पहिनाता हूँ॥४५॥

कर्म बन्धन से मुक्ति

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥

बड़ी बड़ी जंजीरों को,
लेकर कसा शरीरों को।
जकड़ दिया है जोरों से,
नख-शिख चारों ओरों से।
मोटी लौह शृंखलाएँ,
छील रही हों जंघाएँ।
इतना दृढतम बंधन हो,
पराधीन बंदीजन हो।
महामन्त्र यदि जपता है,
तो स्वतन्त्र हो सकता है।
लगातार यदि जाप करे,
मुक्ति स्वयं ही आप वरे।
हो जाता स्वच्छंद अहा
तत्क्षण ही निर्बन्ध अहो।
टूटे बन्धन कर्मों के,
प्रकटें वैभव धर्मों के।

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावो की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥४६॥

सप्त भयो से मुक्ति

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ ॥
जो इस मंगल—गीता को,
पावन—परम पुनीता को ।
भक्ति भाव से पढ़ते हैं,
हृदय क्षेम में जड़ते हैं ।
वही विवेकी कहलाते,
उनके ये भय भग जाते ।
मद उन्मत्त गजेन्द्रों का,
बर्बर सिंह मृगेन्द्रों का ।
धू धू करते ग्रामों का,
सर्पों का, संग्रामों का ।
क्षोभित हुए समुद्रों का,
रोग जलोदर रुद्रों का ।
बन्धन का भी भय भगता ।
भक्त मोक्ष मग में लगता ।
दैहिक, दैविक विपदाएं,
क्षण में सभी पला जाएं ।
'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ ॥४७॥

शुभाशीष एवं वरदान प्राप्ति

आदिनाथ के श्री चरणों में सादर शीश झुकाता हूँ।
भक्तामर के अभिनन्दन की मंगल-गीता गाता हूँ॥

रंग—बिरंगे फूलों की,
वर्ण - वर्ण अनुकूलों की।
यह भक्तामर माला है,
गुण का धागा डाला है।
जो भी इसको पहिनेंगे,
आत्म कंठ गत कर लेंगे।
झूमी हुई भक्तियों से,
श्रद्धा भरी शक्तियों से।
वह लक्ष्मी को पायेंगे,
निज सम्मान बढ़ायेंगे।
'मानतुंग' श्रीमान् रहें
मुनिवर भक्त प्रधान रहें।
उनके ही आशीषों का,
मंगलमयी मुनीशों का।
भाव चुरा अनुवाद किया,
मधुर-मधुर आस्वाद लिया।

'मानतुंग' मुनिवर की कृति को भक्ति-प्रसून चढ़ाता हूँ।
उनके भावों की यह माला, भक्तों को पहिनाता हूँ॥४८॥

सिद्धचक्र का भजन

श्री सिद्धचक्रका पाठ करो दिन आठ।
ठाठसे प्रानी, फल पायों मैना रानी ॥ टेक ॥

मैना सुन्दरि इक नारी थी, कोढ़ो पति लखि दुखियारी थी।
नहिं पड़े चैन दिन रैन व्यथित अकुलानी ॥फल०॥ १

जो पतिका कष्ट मिटाऊंगी तो उभय लोक सुख पाऊंगी।
नहिं अजा गलस्तनवत निष्फल जिन्दगानी ॥फल०॥ २

इक दिवस गई जिन मंदिर में, दर्शन करि अति हर्षी उर में।
फिर लखे साधु निर्ग्रन्थ दिगम्बर ज्ञानी ॥फल०॥ ३

बैठी मुनि को करि नमस्कार निज निन्दा करती बार-बार।
भरि अश्रु नयन कही मुनिसौं दुखद कहानी ॥फल०॥ ४

बोले मुनि पुत्री धैर्य धरो श्री सिद्धचक्र का पाठ करो।
नहिं रहे कुष्ठ की तन में नाम निशानी ॥फल०। ५

सुनि साधु बचन हर्षी मैना, नहिं होंय झूंठ मुनि के बैना।
करिके श्रद्धा श्री सिद्धचक्र की ठानी ॥ फल० ॥ ६

जब पर्व अठाई आया है, उत्सव युत पाठ कराया है।
सबके तन छिड़का यन्त्र न्हवन का पानी ॥फल०॥ ७

गंधोदक छिड़कत वसुदिन में नहिं रहा कुष्ठ किंचित तन में।
भई सात शतक की काया स्वर्ण समानी ॥फल०॥ ८

भवभोग भोगि योगेश भये, श्रीपाल कर्म हनि मोक्ष गये।
दूजे भव मैना पावै शिव राजधानी ॥ फल० ॥ ९

जो पाठ करें मन-वच-तन से, वे छूटि जांय भव बन्धन से।
'मक्खन' मत करो विकल्प कहा जिनवानी ॥फल०॥ १०

आरती-चौबीस तीर्थंकर भगवान की

करहुं आरती आज जिनेश्वर तुम्हरे द्वारे
तुम्हरे द्वारे स्वामी तुम्हरे द्वारे...

ऋषभ अजित संभव जिन स्वामी;
अभिनन्दन महाराज जिनेश्वर तुम्हरे द्वारे, करहुं आरती.
सुमति पदम सुपार्श्व जिन स्वामी,
चन्द्र प्रभू महाराज जिनेश्वर तुम्हरे द्वारें, करहुँ आरती.
पुष्पदन्त शीतल श्रेयांस जिन स्वामी,
वासुपूज्य महाराज जिनेश्वर तुम्हरे द्वारे, करहुँ आरती.
विमल अनन्त धर्म जिन स्वामी,
शांतिनाथ महाराज जिनेश्वर तुम्हरे द्वारे, करहुँ आरती.
कुन्थ अरह मल्लि जिन स्वामी,
मुनिसुव्रत महाराज जिनेश्वर तुम्हरे द्वारे, करहुँ आरती.
नमि नेमि वन्दों पार्श्वनाथ जिन स्वामी,
वर्द्धमान महाराज जिनेश्वर तुम्हरे द्वारे,
करहुं आरती आज जिनेश्वर तुम्हरे द्वारे ॥

थोक पुस्तक प्राप्ति स्थान :

१. निर्मलकुमार संदीपकुमार जैन,
जैन फोटो फ्रेमींग हाउस, इतवारा बाजार-सागर (म.प्र.)

२. शैलेश डाह्याभाई कापड़िया,
दिगम्बर जैन-पुस्तकालय, गांधीचौक सूरत-३९५००३.

के. नं. : २७६२१